

(२) निकाय ग्राहिणीके लिये वर्णन की वजह? एवं शूर्विद्या उ
अशूर्विद्या शूलि रखें?

⇒ □ जट्ठः

ग्राहिणीका निकाय अष्ट शुल ग्राहिणी रणन् वाह
मिक्ता प्रदान राहा।

□ संक्षा :

निकाय दे लिये ग्राहिणी का निकायका जात्रा, चाला
उत्तर, प्रवन्ध उ व्यापीनियाते विभेदजाते प्रादान दिए निका
प्रदान राहे शुल ग्राहिणीका निका राहा शुल,

ग्राहिणीका निका असत्त्वे दानासिका उ निकायका जात्रोंमि रालरून
"Man is the measure of all things" जग्य सब विवर
मानुष्ये शुल मूल विवर,

□ समर्थकका अनु :

ग्राहिणीका भवयादृ विकृती का समर्थक अनु शुलन
तुम, एप्पेल, विवेगनन्द, व्यीक्षनाप, जात्रोंमि, प्रगृह,

□ शूर्विद्या :

ग्राहिणीका लम्हा → किम्बु

(i) निम्बु शूल समुवनात् विवाह - निम्बु तात
एवं पूरुषपै वाह एवं वभवित्वे दृष्टे कठुलि
शूल, शुल उ रैमिट्ट निए ज्ञात्रन वाह,
से शूलि विवाह वाहले निम्बु इत्ति शाह,
ग्राहिणीका निकाय मूल लम्हा शुल, निम्बु
शूल समुवनात् विवाह घोला.

(ii) जात्र उपलक्षि उ जात्र प्रवाम - निकाय

एवं जनुज्ञम लम्हा शुल निम्बु जात्र उपलक्षि
उ जात्र प्रवाम जाग्राप वाह, निकाय उ निम्बु मर्त्तु
जात्र उपलक्षि व्योप एवं मर्त्तुम तात्र मर्त्तु
लिप्तिपत्त आस एवं द्वाप उ निजाके
सत्तिका तात्र प्रवाम विष्ट वाह.

(iii) निम्बुविवाहका निकायान - जार्वनिका निका

शुल निम्बुविवाहका निम्बुविवाहका निका निम्बु
तात्र निजाके चाला, प्रवन्ध, जामच्च उ

आधुर अनुपाती भिक्षा प्रश्न काढ़ते पाठें,
जो गुरुकुण्डानुया भिक्षाः लक्ष्यः मार्गिम
मिमूर्णन्त्रिक भिक्षा सार्थक राह जला घास,

(ii) सु-गुरुकुण्ड विषयम् — गुरुकुण्डन्त्रिक भिक्षाः
भिक्षार्थः सार्विक विषयम् दोला चक्षो वास इप.
इप द्वाश भिक्षाधीः गुरुकुण्ड विषयम् दोऽप्य, इप
जो सु-गुरुकुण्ड अविकाशी इष्टे उष्टे.

(iii) सूजनमील मुमण्ड विषयम् — गुरुकुण्ड सूजनमील
मुमण्ड मर्णु अवश्य इष्टे जाः प्रपाच विषयम्
मार्गेन इल गुरुकुण्डन्त्रिक भिक्षाः अनुज्ञम लक्ष्य,
इप मार्गिम गुरुकुण्ड आवृत्ति सूजनमील राङ्ग
उद्युक्त वास घास,

■ अभ्युक्तिः

गुरुकुण्डन्त्रिक भिक्षाः नानान भूर्विष्ट शरण्येष एव
अभ्युक्तिः ए गुरुकुण्ड दिग् शुलि अच्छीकाः वास घास ना,
गुरुकुण्डन्त्रिक भिक्षाः अभ्युक्तिः शुलि इल —

(ु) जाग्यवेण्ट्रिक भिक्षा —

भिक्षाः गुरुकुण्डन्त्रिक लक्ष्य
भिक्षा देष्ट इप वर्ष, गुरुकुण्ड जाग्यवेण्ट्रिक
तु व्याप्तिः इष्टे उपासः सख्यावना धार्ये,
इप इल वास अविष्ट्र जमाज जीवल सार्थक जार्य
सर्वज्ञ विषयम् काढ़ते पाठें ना,

(ii) प्रावीनणाः अप्य ग्राष्टाः —

गुरुकुण्डन्त्रिक भिक्षाः नीतिष्ठ गुरुकुण्ड
अर्पीक प्रावीनणाः दालः वास वला इप्पद्ध, किन्तु
अलक्ष्येत देष्ट घास, गुरुकुण्ड देष्ट अवर्व प्रावीनण
अप्य ग्राष्टाः कर्त्तृ, जीवनधारन वास, ए गुरुकुण्ड
उ जमाज उपास्तु लक्ष्य अविक्षाः क,

(iii) व्याप्तिः उ जीलि वाक्यः —

भिक्षा उ गुरुकुण्डन्त्रिक लक्ष्य
प्रल्पत गुरुकुण्ड पूर्वक वृक्षक एते भिक्षा देष्ट घासः

कथा रसा शहरे, गान्धी वाचुते प्रवृत्ति गान्धी
जन् पूर्ण पूर्ण छात्र मिमांसात अष्टु
गान्धी उ जीव,

(iv) सामाजिक चारिदा अपश्लेष -

गान्धीजीविका भिक्षा
समाजके जरूरा करे, गान्धीजी भवाविक
शुद्ध दिल मिमांसालय कथा रसा शहरे,
जहाँ एल मिमांसा दिल मिमांसा चारिदा मै
दिल जीवन शहरे ना, अपार शै भिक्षा
सामाजिक चारिदा अपश्लेष शहरे.

(v) सामाजिक उन्नपन वर्ण -

गान्धीविका भिक्षा राण
भिक्षा लेणे सामाजीकरण भिक्षा, भूगोलविक्षा
भिक्षा, जीव सशिखियें भिक्षा एकान रसा
रस ना, जहाँ एल भिक्षा सामाजिक विकास
गान्धी रस ए सामाजिक उन्नपन वर्ण मौजूद
रस.

अ उ अधेरे रसा रस ए भिक्षा गान्धी
जीविक लक्ष्य नानान सुरिया उकाले ए
अमृतिर्या उपर्युक्त, जौ भिक्षा सारिक विळास
जन् प्रवृत्ति सामाजिक विकास जन् गान्धीजीविक
उ जमाजजीविक भिक्षा समन्वय एले रस.